Ranchi University
NEWSLETTER
March 2022

35 वां दीक्षांत समारोह

4 फरवरी को विश्वविद्यालय के मोरहाबादी स्थित आर्यभट्ट सभागार में विवि का 35 वां दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि राज्यपाल सह कुलाधिपति श्री रमेश बैस ने सभी टॉपरों को गोल्ड मेडल प्रदान किए। साथ ही, 106 पीएच डी और डिलिट् उपाधियां प्रदान की गईं। रांची विश्वविद्यालय के 35 वें दीक्षांत समारोह में छात्राओं का दबदबा कायम रहा। विभिन्न विषयों में टॉपरों को दिए जानेवाले गोल्ड मेडल के दो तिहाई हिस्से पर छात्राओं का ही कब्जा रहा। राज्यपाल ने अपने दीक्षांत भाषण में कहा कि शिक्षित, कुशल और हुनरमंद युवा आज की जरूरत हैं।

समारोह में 79 गोल्ड मेडल भी प्रदान किए गए, जिनमें 55 छात्राओं के हिस्से आए। इनमें 11 प्रायोजित गोल्ड मेडल थे। शैक्षणिक शोभायात्रा के साथ समारोह की विधिवत् शुरुआत हुई। इसमें राज्यपाल श्री रमेश बैस, कुलपति डॉ. कामिनी कुमार व विश्वविद्यालय पदाधिकारियों के अलावा सभी संकाय के डीन, विभागाध्यक्ष, कॉलेजों के प्राचार्य, सीनेट, सिंडिकेट और एकेडेमिक काउंसिल के सदस्यों ने भाग लिया। समारोह में सभी डिग्री व उपाधि प्राप्त करनेवालों के अलावा विश्वविद्यालय के अधिकारीगण भी समारोह के ड्रेस कोड, भारतीय परिधान में थे।

समाज निर्माण में योगदान दें युवा: राज्यपाल

अपने दीक्षांत भाषण में राज्यपाल सह कुलाधिपति श्री रमेश बैस ने कहा कि शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र निर्माण है। विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान देना, उपाधि देना ही शिक्षक धर्म नहीं है, बल्कि इनमें चेतना जागृत करना, साथ ही उन्हें बेहतर और संपूर्ण इंसान बनाना शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। कुलाधिपति ने कहा कि युवा समाज में दिशा निर्देशक की भूमिका निभाएं। डिग्री प्राप्तकर्ताओं को उन्होंने कहा कि अभी तक आप अपने माता-पिता और गुरुजनों के परामर्श से चलते रहे, पर आगे आपको स्वयं रास्ता तय करना है। विश्वविद्यालय ने आपको संस्कारित किया है, अब आपको नई पारी खेलनी है। उन्होंने कहा कि आत्मविश्वासी होने के साथ विनम्र भी बनें और समाज निर्माण में योगदान दें। राज्यपाल ने रांची विश्वविद्यालय में उच्च कोटि शोध कार्य पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि रोजगार व स्वरोजगार के अधिक अवसर हों, ताकि प्रतिभा पलायन नहीं हो।

Credentials

Patron : *Vice-Chancellor*
Editor :
Dr RK Sharma, Associate Prof. of English, University Department
Managing Editor :
Dr Kanjiv Lochan, Astt. Prof. of History, University Department
Representatives
Birsa College, Khunti
Naseem Haider
B S College, Lohardaga
Dr. Nikhil Kumar
Doranda College, Ranchi
Dr. Nilu Kumari
Gossner College, Ranchi
Dr. Subrato
J N College, Ranchi
Dr. Soni Tiwari
RLSY College, Ranchi
Dr. Agha Zafar
Mandar College, Mandar
Dr. Bandna Rai
Marwari College, Ranchi
Rahul Kumar
Simdega College, Simdega
Dr. Tiriyo Ekka
School of Humanities (PG Depts.)
Dr. Kumud Kala Mehta
School of Science (PG Depts.)
Dr. Anand Kumar Thakur
University Affaires
NSS Coordinator Dr. Brajesh Kumar
Photographer
Niranjan Kumar
We are looking for representatives for the *Newsletter* from teachers/individuals of the following institutions :
B N J College, Sisai
K O College, Gumla
K C B College, Bero
Marwari College, Ranchi
P P K College, Bundu
Ranchi Women's College
S S Memorial College, Ranchi
Minority Colleges
Registrar's office
School of Commerce
School of Social Sciences

From the editor's desk

Swinging between online and offline modes of class under the shadow of covid-19, Ranchi University campus underwent unprecedented situations marked by exuberantly flamboyant youthful vibration to quite unbearable isolation. Since higher education is fundamentally meant to induce and inculcate thinking, the prevailing circumstances reaffirmed our existence as slave to the acts of providence amidst all claims of overwhelming advancement. Gradually, the upswing towards normalcy is bringing the campus life back with soothing spring gusts.

With the last quarter of academic year (21-22) on anvil, sports and cultural activities in different colleges are on in full swing. Our players proved their talents to become the winners in East Zone Inter-University Championships in Badminton, Hockey, and Athletics. Many of these players have qualified for national games. This achievement is directly an outcome of the constant effort of university towards promoting sporting events at different levels. Our units like NSS and Radio Khanchi are rendering valuable services to society in all the possible ways.The IQAC of university is pushing its best to ensure the best possible grade in upcoming NAAC evaluation. All commendations to these units which are engaged in enhancing the prestige of university.

Since our university is the academic abode of nearly 1.65 lacs of students, rarely any day passes without any memorable activity. As academics, sports and culture are the three pillars that constitute the raw materials for the holistic development of personality, the university successfully provides a suitable platform where the best material is chiseled and churned out.The university arguably considers that producing globally employable students is its goal and accordingly all the available human and material resources within its ambit are appropriately coordinated and utilized to attain this objective.

The university extends warm greetings to all the newly admitted students of postgraduation and wishes all the members of university family a very memorable and vibrant spring.

Dr. Raj Kr Sharma

अलख

इतिहास का परिचय व उसके स्रोत, आदि

आदिमानव से लेकर आज के स्पेस-मानव के जीवन का उद्देश्य अधिक दिनों तक मानसिक, दैहिक और आध्यात्मिक सुख-शांति और सम्मान से जीना ही है। इसी उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए मनुष्य पारिवारिक-सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक ताना-बाना बुनता है। विज्ञान और तकनीक की साधना भी इसी उद्देश्य से की जाती है। आज भी मानसिक, दैहिक और आध्यात्मिक सुख-शान्ति की खोज जारी है। इसके लिए यह आवश्यक और उपयोगी हो जाता है कि हम अपने पूर्वजों की गतिविधियों को समझें। सुख-शांति की खोज के दौरान उनके उद्यम, संघर्ष, सफलताओं और असफलताओं से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, सावधान हो सकते हैं।

इतिहास अतीत को समझने,वर्तमान को दुरुस्त करने एवं भविष्य को समृद्ध करने के लिए एक उपयोगी विद्या है। जाति-चेतना से संपृक्त भारतीय समाज तो अतीत में सैंकड़ों वर्ष पहले घटित घटनाओं से प्रभावित होता है। इसलिए भारत का प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास बहुत उपयोगी है। चूँकि निकट अतीत का वर्तमान पर अधिक प्रभाव पड़ता है आधुनिक युग के इतिहास का गहन अध्ययन किया जाता है।

अब प्रश्न उठता है कि हम इतिहास को जानें कैसे? इतना तो तय है कि इतिहास ही नहीं राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, साहित्य, समेत किसी भी विषय की जानकारी हमें तीन प्रकार से होती है: 1. शब्दों से, 2. सामान से और 3. प्रयोगों से या प्रत्यक्ष दर्शन से। इतिहास की जानकारी हमें केवल शब्दों (पुस्तकों) और सामान (पुरातत्त्व) से ही होती है। हम इतिहास या अतीत की घटनाओं या प्रयोगों के प्रत्यक्षदर्शी नहीं हो सकते, जैसा कि रसायन या भौतिक विज्ञान सीखने के क्रम में हम हो जाते हैं। विभिन्न घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी नहीं होने के कारण ही इतिहास पढ़ते समय बार-बार विवादों, असहमतियों, अनिर्णयों का सामना करना होता है। उदाहरण के लिये हम दावे के साथ यह नहीं कह सकते कि हड़प्पा सभ्यता का पतन अमुक कारण से ही हुआ। यदि हम उसके पतन के प्रत्यक्षदर्शी होते तो कह सकते थे कि हड़प्पा सभ्यता बाढ़ के (या किसी अन्य) कारण नष्ट हो गयी।

अत: इतिहास पढ़ते समय हमें बार-बार तर्कों, व्याख्याओं और मान्यताओं का सहारा लेना पड़ता है। यह और यही एक विद्या है जिसमें तथ्य (फैक्ट) और व्याख्या (इन्टरपर्टेशन) साथ-साथ चलते हैं। और इतिहास में तथ्यों और व्याख्याओं, दोनों का स्थान समान रूप से महत्त्वपूर्ण है।

इतिहास के स्रोत के प्रश्न पर लौटते हुए यह समझना आवश्यक है कि विभिन्न स्रोत केवल तथ्य या फैक्ट हमें बताते हैं। उनकी व्याख्या इतिहास लेखक अपने पूर्वाग्रहों, मान्यताओं एवं आवश्यकताओं के अनुसार और देश काल की परिस्थितियों के अनुसार करते हैं। इसी लिए इतिहास सतत नूतनीय और नित्य परिवर्तनशील और निर्विकार नहीं बल्कि सविकार माना जाता है। यह भी कहते हैं कि जो शासन वर्तमान को नियंत्रित करता है वह अतीत/इतिहास का भी नियंत्रण करता है।

तो इतिहास के तथ्यों की जानकारी हमें मुख्यत: शब्दों और सामग्री से ही मतलब साहित्य से और (पुरा) तत्त्व से मिलती है। आदि मानव का जीवन बिना साहित्य के एवं कुछ गिने चुने सामान से ही चल जाता था जबकि आधुनिक जीवन में सामान और साहित्य का बहुतायत है। स्पष्ट है कि सभ्यता के विकास के साथ-साथ सामान और साहित्य का भी विस्तार होता रहा। इसलिए, आदि मानव के जमाने के स्रोत बहुत कम हैं और आधुनिक काल, उदाहरण के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के जमाने के स्रोत अनगिनत हैं।

आजकल तो शब्दों के अनगिनत स्रोत हैं। उदाहरण के लिए, टेलिविजन, रेडियो, मोबाइल फोन, सी.डी., पुस्तकें आदि। (इनके अतिरिक्त शिक्षक और अन्य सजीव वक्ताओं के शब्द तो उपलब्ध हैं ही।) किन्तु पुराने जमाने में सजीव वक्ताओं के बाद शब्द केवल पुस्तक रूप में उपलब्ध थे। ये भूर्ज पत्र या ताड़ पत्रों पर हाथ से लिखे जाते थे। इन पत्रों को गाँठ कर रखते थे इसलिए इन्हें ग्रन्थ (= गांठ) कहा जाता था। पुस्तकों या ग्रन्थों के समूह को साहित्य कहा जाता है। भारतीय इतिहास के स्रोतों के रूप में निम्न प्रकार के साहित्य का उल्लेख किया जाता है:-

1. धार्मिक - वेद, पुराण, उपनिषद् और बौद्ध व जैन धर्म, आदि की पुस्तकें।
2. यात्री साहित्य - मेगास्थनीज, फाहियान, ह्यून्त्सांग, आदि की रचनाएँ।
3. लौकिक - चाणक्य, भास, कालिदास, तुलसीदास, आदि की रचनाएँ।
4. वैज्ञानिक - पाणिनी, चरक, सुश्रुत, वाराहमिहिर, आर्यभट्ट, आदि के ग्रन्थ।
5. ऐतिहासिक ग्रन्थ:- हर्षचरित्, राजतरंगिणी, पृथ्वीराज रासो, आदि।

पुराने सामान को ही पुरातत्त्व कहते हैं। पुरा मतलब पुराना और तत्त्व मतलब सामान। पुरातात्त्विक दृष्टि से इतिहास के स्रोतों को भी 5 भागों में बाँटा जा सकता है: 1. स्मारक/भवन, 2. अभिलेख, 3. सिक्के, 4. अस्त्र-शस्त्र, 5. घरेलू व व्यक्तिगत उपयोग के सामान, जैसे बर्तन, आभूषण, आदि।

पुरातात्त्विक सामग्री में दो सामग्री ऐसी है जिनका महत्त्व उनमें आये शब्दों के कारण बढ़ जाता है। इन दोहरे स्रोतों की गिनती सामान्यत: सामग्री या पुरातत्त्व कोटि के स्रोतों में होती है- अभिलेख और सिक्के।

इतिहास कैसे पढ़ें?

आज से कोई बीस-पच्चीस वर्ष पहले जब छात्र जीवन में हमारी क्लास का अंतिम वर्ग हुआ, विदाई हुई तो मित्रों को कहा, बहुत याद आओगे, यह याद रखना। किन्तु इसी याद रखने की बात से इतिहास के छात्रों को बड़ी मुश्किल होती है। छात्रों को समस्या या शिकायत रहती है कि इतिहास की बातें याद ही नहीं होती।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण कर के यह देखा कि (1) हम किन चीजों को याद रख लेते हैं, और (2) किन चीजों को भूल जाते हैं, और यह भी देखा कि 'भूली' हुई चीजों को 'याद' कैसे कर पाते हैं! इस उद्यम से ज्ञात हुआ कि जिन चीजों को 'नाम' संबंधित 'स्थान' व 'तारीख' तीनों के साथ पढ़ते हैं, वे चीजें अधिक याद रह जाती हैं। इसलिए हमने ना (= नाम), स (= स्थान), ता (= तारीख) अर्थात् 'नास्ता' मंत्र को प्रोजेक्ट किया है। 'नास्ता' के साथ किसी विवरण को पढ़ते/जानते हैं तो उस विवरण के याद रह जाने की बेहतर संभावना रहती है।

एक और बात है किसी भी लेख में यदि अपरिचित, और कठिन शब्दों की संख्या अधिक होगी तो हम उसे न तो ठीक से समझ पाते हैं न याद रख पाते हैं। नये शब्द सीखने जरूरी हैं किन्तु उनका प्रयोग 2 प्रतिशत तक सीमित हो, दाल में नमक की तरह। 98 प्रतिशत मामले में लेख की भाषा सरल-सहज हो। कोशिश रहे कि बोलचाल की भाषा में लेख तैयार करो और यदि कोई अपरिचित या कठिन शब्द लगे तो तुरन्त उसका अर्थ शब्दकोश देख या शिक्षक से पूछ कर जान लेना चाहिए।

-कंजीवलोचन

हल-चल

विद्यार्थी ही हमारे ब्रांड एम्बेसेडर: कुलपति

दीक्षान्त समारोह में कुलपति डॉ कामिनी कुमार ने विश्वविद्यालय की अकादमिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि रांची विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के 42 वर्षों में सफलता के कई सोपान तय किए हैं। कई चुनौतियों का सामना किया है। कहा कि विद्यार्थी ही हमारे ब्रांड एम्बेसेडर हैं। छात्राओं की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि दो-तिहाई गोल्ड मेडल बेटियों के हिस्से आया ये हैं। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय ने नैक मूल्यांकन के दूसरे चक्र की तैयारी शुरू कर दी है। सेल्फ स्टडी रिपोर्ट (एसएसआर) तैयार कर ली गई है। वर्ष 2017 में नैक मूल्यांकन के पहले चक्र में विश्वविद्यालय को बी प्लस प्लस ग्रेड मिला था, इस बार ए ग्रेड लाने का लक्ष्य रखा गया है। समारोह में विश्वविद्यालय के वित्त परामर्शी देवाशीष गोस्वामी, डीएसडब्ल्यू डॉ राजकुमार शर्मा, रजिस्ट्रार डॉ मुकुंद चंद्र मेहता, प्रॉक्टर डॉ. टीएन साहू, परीक्षा नियंत्रक डॉ. आशीष कुमार झा, डिप्टी रजिस्ट्रार डॉ. प्रीतम कुमार, डॉ. ब्रजेश कुमार, डॉ. बीआर झा, डॉ. आनंद कुमार ठाकुर, डॉ. स्मृति सिंह समेत अनेक शिक्षकगण व शिक्षकेतर कर्मचारी मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नीलिमा पाठक ने किया।

चांसलर पोर्टल को प्रभावी बनाए: राज्यपाल

कुलाधिपति राज्यपाल रमेश बैस ने 22 फरवरी को विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों की समीक्षा के दौरान चांसलर पोर्टल को प्रभावी बनाने का निर्देश दिया। उन्होंने विश्वविद्यालयों द्वारा समय पर दीक्षांत समारोह नहीं किया जाता तो विश्वविद्यालय उपाधि छात्रों के घर भेजें दीक्षांत समारोह में विलंब के कारण विद्यार्थियों को परेशानी नहीं होनी चाहिये। उन्होंने सभी शिक्षण संस्थानों में डिजिटलाइजेशन पर चर्चा करते हुए कहा कि सभी शिक्षण संस्थानों को वाई-फाई युक्त करें।

1000 से अधिक पद स्वीकृत

बैठक में राज्यपाल को अवगत कराया गया कि विश्वविद्यालयों में रिक्त प्रशासनिक पदों पर शीघ्र ही नियुक्ति कर ली जाएगी। साथ ही यह भी जानकारी दी गई कि विश्वविद्यालयों में 1000 से अधिक पद स्वीकृत किए गए हैं। रोस्टर क्लियरेंस में यूनिवर्सिटी को यूनिट माना जाएगा। उल्लेखनीय है कि यूनिवर्सिटी को डिपार्टमेंट की बजाय यूनिट मान कर नियुक्ति प्रक्रिया करने से एसटी, एससी, ओबीसी के आरक्षित पद चिंहित रहेंगे। राज्यपाल ने निर्माणाधीन भवनों के निर्माण कार्य की प्रगति की जानकारी लेते हुए भवन निर्माण सचिव भवन निर्माण कार्य तेजी लाने का निर्देश दिया।

शोध का स्तर ऊंचा हो

सभी विश्वविद्यालयों से नई शिक्षा नीति पर चर्चा करते हुए राज्यपाल ने इस संदर्भ में कार्यशाला, सेमिनार का आयोजन करने का निर्देश दिया। उन्होंने झारखंड हायर एजुकेशन काउसिल के कार्यों के संदर्भ में जानकारी ली और कहा कि विश्वविद्यालय में शोध के स्तर के उच्च करें। सभी विश्वविद्यालयों में वित्तीय अंकेक्षण का कार्य पूरा होना चाहिये। उन्होंने राज्य में ओपेन यूनिवर्सिटी की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली। राज्य के विश्वविद्यालयों की सामाजिक कार्य करने के लिए भी कहा। उन्होंने आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष पर आयोजित किये जा रहे सभी कार्यक्रमों की जानकारी राजभवन को प्रेषित करने का निर्देश दिया। बैठक में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति के साथ राज्यपाल के प्रधान सचिव डॉ. नितिन कुलकर्णी, जेपीएससी अध्यक्ष अमिताभ चौधरी, प्रधान सचिव वित्त अजय कुमार सिंह प्रधान सचिव कार्मिक वंदना डाडेल, भवन निर्माण विभाग के सचिव सुनील कुमार आदि मौजूद रहे।

शिक्षकों के 2030 पद है रिक्त

राज्य के विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के 2030 पद रिक्त है। रांची विश्वविद्यालय, डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, कोल्हान विश्वविद्यालय, जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, बिनोद बिहारी महतो विश्वविद्यालय, नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय और सिद्धो कान्ह विश्वविद्यालय में 3732 पद स्वीकृत हैं। इनमें 2030 पद रिक्त है, जबकि 4181 पद अतिरिक्त है, जिन्हें स्वीकृत करने और उन पर नियुक्ति होनी है। राज्य सरकार ने झारखंड लोक सेवा आयोग के माध्यम से 1118 असिस्टेंट प्रोफेसर की नियुक्ति की प्रक्रिया शुरू की जो अभी भी जारी है। इसमें 566 बैकलॉग के और 552 पद रेगुलर के खाली है। बैकलॉग के पदों पर नियुक्ति प्रक्रिया अंतिम चरण में है, जबकि नियमित पदों पर नियुक्ति भी अभी शुरू हुई है।

वोकेशनल कोर कमिटि की बैठक

रांची विश्वविद्यालय के वोकेशनल कोर कमिटी की बैठक 11फरवरी को कुलपति डॉ. कामिनी कुमार की अध्यक्षता में हुई। बैठक में 12 एजेंडों पर विचार-विमर्श किया गया। इसमें डोरंडा कॉलेज, रांची

महिला कॉलेज, मारवाड़ी कॉलेज में बतौर गेस्ट फैकल्टी काम कर रहे शिक्षकों का मुद्दा उठाया गया। गेस्ट फैकल्टी ने मांग की कि उन्हें बतौर अनुबंध शिक्षक नियुक्त किया जाए। तय हुआ कि अनुबंध शिक्षकों के लिए जो भी साक्षात्कार होंगे, उसमें पांच वर्ष से अधिक बतौर गेस्ट फैकल्टी काम करनेवालों को वेटेज दिया जाएगा। इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (आईएमएस) में लैंग्वेज लैब बनाने का प्रस्ताव भी रखा गया। यह व्यवस्था भी की गई कि जबतक आईएमएस का अपना लैंग्वेज लैब नहीं बनता, तबतक उसके छात्र अंग्रेजी विभाग के लैंग्वेज लैब का इस्तेमाल करेंगे। बैठक में वोकेशनल विभागों के बजट पर भी चर्चा हुई और इसपर अगली बैठक में निर्णय लेने पर सहमति बनी।

बैठक में वित्त परामर्शी, कुलसचिव डॉ. मुकुंद चंद्र मेहता, वित्त पदाधिकारी डॉ. एएन शाहदेव, परीक्षा नियंत्रक डॉ. आशीष कुमार झा, उपकुलसचिव डॉ. प्रीतम कुमार, वोकेशनल की उप निदेशक डॉ. स्मृति सिंह आदि मौजूद थे।

कॉलेजों में खरीदारी जेम पोर्टल से ही

गत माह उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग की ओर से सभी विश्वविद्यालयों को पत्र जारी कर कहा है कि विश्वविद्यालय और कॉलेजों की सभी प्रकार की खरीददारी जेम पोर्टल के माध्यम से हो। विश्वविद्यालय प्रशासन ने अंगीभूत कॉलेजों की गर्वमेंट ई मार्केट प्लेस (जेम) पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। कॉलेजों का जेम पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन प्राचार्य और बर्सर के आधार नंबर से होना है। सभी अंगीभूत कॉलेजों को निर्देशित किया गया है कि जल्द से जल्द विश्वविद्यालय के माध्यम से जेम पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करा लें। अब तक तीन कॉलेजो रांची वीमेंस कॉलेज, जेएन कॉलेज धुर्वा और बीएस कॉलेज लोहरदगा का जेम पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन हुआ है। सात अन्य अंगीभूत कॉलेज- पीपीके कॉलेज बुंडू, सिमडेगा कॉलेज, केसीबी कॉलेज बेड़ो, मांडर कॉलेज, बीएनजे कॉलेज सिसई, डोरंडा कॉलेज और बिरसा कॉलेज खूंटी का रजिस्ट्रेशन प्रक्रियाधीन है। मारवाड़ी कॉलेज, राम लखन सिंह यादव कॉलेज और एसएस मेमोरियल कॉलेज की जेम पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन की। प्रक्रिया अभी शुरू नहीं हुई है। इसको लेकर कुलपति डॉ. कामिनी कुमार ने सभी अंगीभूत कॉलेज के प्राचार्यो के साथ 8 फरवरी को बैठक की, बैठक में सीसीडीसी डॉ राजेश कुमार ने जेम पोर्टल का प्रारूप व रजिस्ट्रेशन करने की प्रक्रिया की जानकारी दी।

कुलपति ने क्लासरूम का ब्योरा मांगा

कुलपति डॉ. कामिनी कुमार ने सभी अंगीभूत कॉलेजों में इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के तहत क्लास रूम और चहारदीवारी निर्माण के लिए ब्यौरा मागा है। जिन कॉलेजों में क्लास रूम की कमी है या चहारदीवारी नहीं है इनका प्रस्ताव तैयार कर सरकार के पास भेजा जाएगा। चहारदीवारी के लिए प्राचार्यों से कॉलेज की जमीन के कागजात की कॉपी और क्लास रूम निर्माण के लिए प्रस्ताव मांगा गया है।

कुडुख भाषा की पुस्तकों का लोकार्पण

रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा केंद्र के पद्मश्री डॉ. रामदयाल मुंडा अखड़ा में 21फरवरी को मातृभाषा दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कक्षा छह, सात व आठवीं के लिए कुडुख भाषा में प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. कामिनी कुमार मौजूद थीं। उन्होंने कहा कि मातृभाषा को बचाने के लिए हमें अपनी संस्कृति को बचाना होगा। हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व करना चाहिए। जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा केंद्र के समन्वयक डॉ. हरि उरांव ने कहा कि हमें अपनी भाषा को चुनौती के रुप में लेना होगा। क्योंकि जिस समाज की अपनी मातृभाषा और अपनी संस्कृति नहीं होती है उस समाज की अपनी कोई पहचान नहीं होती है। मातृभाषा भाषा मां के दूध के समान है। प्रॉक्टर प्रो. टीएन साहू ने कहा कि भाषा अपने समाज की प्रतिबिंब होती है, वह संरक्षित व सुरक्षित नहीं रहेगी तो प्रतिबिंब की कल्पना नहीं की जा सकती है। नागपुरी भाषा विभाग के अध्यक्ष डॉ. उमेश नंद तिवारी ने कहा कि मातृभाषा की रक्षा का दायित्व हम सबका है। मौके पर विद्यार्थियों व शोधार्थियों ने कविता, नाटक, गीत व आलेख प्रस्तुत किया। संचालन किशोर सुरीन व डॉ. दमयंती सिंकू का रहा।

मातृभाषा की धरोहर को बचाना होगा: कुलपति

नागपुरी भाषा परिषद और राम लखन सिंह यादव कॉलेज की ओर से 21फरवरी को मातृभाषा दिवस पर प्रतिभा सम्मान समारोह सह पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. कामिनी कुमार मौजूद थी। अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य डॉ. जयकांत प्रसाद सिंह ने की। कार्यक्रम में नागपुरी हिन्दी के दिवंगत साहित्यकार पद्मश्री डॉ. गिरधारी राम गौंझू की पत्नी सरस्वती देवी को सम्मानित किया गया। कुलपति डॉ. कामिनी कुमार ने कहा कि जन्म के बाद जो बोलते हैं वही मातृभाषा है। हमें अपनी मातृभाषा की धरोहर को बचाना है। अंग्रेजी भाषा को सरल करने के लिए मातृभाषा को प्रचलन में अधिक लाना है। उन्होंने कहा कि अनुवाद पर जोर देने की आवश्यकता है, जो प्राथमिक से उच्च शिक्षा में उपयोगी होगी। मातृभाषा पर बल देते हुए उन्होंने शिक्षकों की संख्या बढ़ाने की जरूरत बताई। साथ ही पीएचडी के लिए निदेशक के अंदर शोधार्थियों की सीटों की संख्या को बढ़ाने के लिए प्रस्ताव तैयार कर डीन के माध्यम से भेजने को कहा। कार्यक्रम में उपस्थित रजिस्ट्रार मुकुंद चंद्र मेहता ने कहा कि माँ की भाषा ही मातृभाषा है। वित्त पदाधिकारी डॉ. कुमार शाहदेव ने कहा कि यहां की परंपरा में ही सहयोग की भावना है। संगीत, सभ्यता तथा भाषा में ही है अच्छे का सम्मान एवं गुणी को हृदय में रखना यहां की विशेषता है।

पांच पुस्तकों का लोकार्पण

कार्यक्रम में पांच पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। इनमें झारखंड के शहीद, नागपुरी अनुवाद - डॉ. खालिक अहमद व राजेश कुजूर, गोबिंद शरण लोहरा व्यक्तित्व एवं कृतित्व- डॉ. राम कुमार, कुडुख संस्कार गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन- डॉ. राम किशोर भगत, मधुधारा और मधुमंजरी कुड़माली कविता- रतन कुमार महतो शामिल हैं।

जेएन कॉलेज धुर्वा में कार्यक्रम आयोजित

जेएन कॉलेज धुर्वा में सांस्कृतिक समिति और भाषा विभाग की ओर से 21फरवरी को मातृभाषा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ एसके झा ने की। उन्होंने कहा कि व्यक्ति जितनी सहजता से मातृभाषा में अपनी बात अभिव्यक्त कर सकता है, किसी अन्य भाषा में नहीं कर सकता है। नागपुरी के विभागाध्यक्ष डॉ. एचके चौरसिया ने झारखंड में बोली जानेवाली विभिन्न भाषाओं पर चर्चा की।

एसएस कॉलेज के वाणिज्य विभाग में संगोष्ठी

एसएस मेमोरियल कॉलेज के वाणिज्य विभाग में 8 फरवरी को गोल सेटिंग एंड पर्सनालिटी डेवलपमेंट विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें बतौर मुख्य वक्ता रांची विश्वविद्यालय के पूर्व रजिस्टार डॉ अमर कुमार चौधरी उपस्थित थे। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने जीवन के उद्देश्य को पहचानने, लक्ष्य को प्राप्त करने व अपने समय का सदुपयोग करने से संबंधित कई महत्वपूर्ण बातें बताई। संगोष्ठी में वाणिज्य विभाग की अध्यक्ष डॉ. प्रेमा कुमारी, डॉ. महावीर प्रसाद, डॉ. फौजिया तबस्सुम, प्रांजल साहु, नेहा टोप्पो समेत अन्य उपस्थित रहे।

एनएसएस करता है सेवा भाव विकसित

डोरंडा कॉलेज की एनएसएस इकाई और झारखंड राज्य एड्स नियंत्रण समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में एनएसएस के स्वयंसेवकों के लिए प्राचार्य डॉ बीपी वर्मा की अध्यक्षता में ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस दौरान कॉलेज में रेड रिबन क्लब का गठन किया गया। प्राचार्य ने कहा कि एनएसएस के माध्यम से युवाओं में सेवा भाव विकसित होता है और पढ़ाई के साथ ही साथ सामाजिक संवेदनशीलता का बोध होता है। उन्होंने एनएसएस के स्वयंसेवकों से गांव और बस्तियों में जाकर समुदाय की बेहतरी के लिए कार्य करने की अपील की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रांची विश्वविद्यालय के एनएसएस कार्यक्रम समन्वयक डॉ. ब्रजेश कुमार ने कहा कि ने युवाओं के अंदर उत्साह, ऊर्जा और साहस की प्रचुरता होती है, जिन्हें रचनात्मक कार्यों में लगाकर सामाजिक बदलाव का अग्रदूत बनाना है।

मारवाड़ी कॉलेज में चलेगा कैंपस ड्राइव

रांची विश्वविद्यालय के अंतर्गत मारवाड़ी कॉलेज में मार्च में कई कंपनियां प्लेसमेंट ड्राइव आयोजित करने जा रही हैं। इनमें किसी भी संकाय से स्नातक उत्तीर्ण विद्यार्थी मारवाड़ी कॉलेज के प्लेसमेंट सेल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। जो कंपनियां पूर्व क्षेत्र प्लेसमेंट ड्राइव के लिए आ रही हैं, उनमें आईसीआईसीआई और चोलामंडलम सिक्योरिटी लिमिटेड, एसबीआई लाइफ और इंफोसिस शामिल हैं। कैंपस ड्राइव के लिए आवेदन 28 फरवरी से 5 मार्च भारत क तक किया जा सकता है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी मारवाड़ी कॉलेज की आधिकारिक वेबसाइट www.marwaribollege.ab.in पर 27 फरवरी को उपलब्ध किया गया। आईसीआईसीआई में सेल्स में रिक्तियां हैं। सीटीसी–प्रदर्शन के उद्घाटन आधार पर 2,15,000 रुपये के अलावा वार्षिक बोनस दिया जाएगा। इसके अलावा मेडिक्लेम, ग्रुप टर्म इंश्योरेंस, यात्रा, मोबाइल और वाहन भत्ता, आदि के लाभ संगठनात्मक नीतियों के अनुसार लागू होंगे। इसके लिए योग्यता– किसी भी संकाय में स्नातक/स्नातकोत्तर करंट बैच के विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं। चोलामंडलम सिक्योरिटी लिमिटेड में वेल्थ मैनेजर की रिक्तियां हैं। इसमें सीटीसी– 1.44 से 2.50 लाख प्रति वर्ष है।

आरएलएस कॉलेज में संगोष्ठी का आयोजन

राम लखन सिंह यादव कॉलेज के खोरठा विभाग की ओर से 19 फरवरी को खोरठा साहित्यकार– श्रीनिवास पानुरी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. जयकांत प्रसाद सिंह ने की। विभागाध्यक्ष डॉ. खालिक अहमद ने इसकी शुरुआत करते हुए कहा कि अपनी भाषा उतनी ही महत्त्व पूर्ण है, जितना एक स्वस्थ्य शरीर के लिए प्राणवायु। प्राचार्य डॉ. जयकांत प्रसाद सिंह ने कहा कि किसी देश या समुदाय की पहचान उनकी भाषा है। नई शिक्षा नीति के तहत प्राथमिक स्तर से ही अपनी मातृभाषा में शिक्षण कार्य होना है। वक्ताओं ने कहा कि श्रीनिवास पानुरी का खोरठा भाषा साहित्य में योगदान नहीं भुलाया जा सकता है।

नहीं रहीं प्रो डॉ इच्छापूरक

रांची वीमेंस कॉलेज बॉटनी विभाग की पूर्व अध्यक्ष व स्वतंत्रता सेनानी स्व अवतार सिंह आजाद की पुत्री प्रोफेसर इच्छापूरक (73) का निधन 22 फरवरी की दोपहर इलाज के क्रम में हो गया. डॉ इच्छापूरक रांची वीमेंस कॉलेज पूर्ववर्ती छात्र संघ (गरिमा) की अध्यक्ष भी थीं. वह सेवानिवृत्ति के बाद गरीब छात्राओं की नि:शुल्क ऑनलाइन क्लास भी लेती थीं. इन्हें झारखंड सरकार की ओर से सर्वोत्तम शिक्षिका अवार्ड मिला. उनके निधन पर विवि की कुलपति प्रो कामिनी कुमार, डॉ. ज्योति कुमार, डॉ. एके चौधरी, रांची वीमेंस कॉलेज की पूर्व प्राचार्या डॉ. मंजु सिन्हा, वर्तमान प्राचार्या डॉ. शमशुन नेहार, डॉ. आभा प्रसाद, डॉ. सुषमा दास गुरु, डॉ. शालिनी मेहता, डॉ. रत्ना सिंह, डॉ. इंदिरा पाठक आदि ने शोक व्यक्त किया है. डॉ. इच्छापूरक के निधन पर 22 फरवरी को रांची वीमेंस कॉलेज आर्टस ब्लॉक स्थित मैत्रेय सभागार में शोक सभा का आयोजन किया गया.

इन दिनों

वीमेंस कॉलेज में युवा महोत्सव

रांची वीमेंस कॉलेज में पांच दिवसीय युवा महोत्सव की शुरुआत 26 फरवरी को हुई। पहले दिन इसके तहत विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। जिनमें वाद विवाद प्रतियोगिता (हिन्दी/अंग्रेजी), काव्य पाठ प्रतियोगिता (हिन्दी/अंग्रेजी), रंगोली प्रतियोगिता, कार्टूनिंग, पोस्टर

निर्माण, ऑन द स्पॉट पेंटिंग, क्ले मॉडलिंग, स्पॉट फोटोग्राफी, मेहंदी आदि प्रतियोगिताएं शामिल थीं। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था- ऑनलाइन शिक्षा एक बेहतरीन विकल्प है। वहीं, अंग्रेजी में विषय था- सहशिक्षा संस्थान विद्यार्थियों के लिए बेहतर। काव्य पाठ में छात्राओं ने हिन्दी के लिए रश्मिरथी से- कृष्ण की चेतावनी का भावपूर्ण पाठ किया। अंग्रेजी में कविता-ओ कैप्टन माय कैप्टन..., का पाठ भी छात्राओं ने किया।

विश्वविद्यालय में बनेंगे रेड रिबन क्लब

विश्वविद्यालय के अंतर्गत विभिन्न कॉलेजों व विश्वविद्यालय विभागों में रेड रिबन क्लब (आरआरसी) का गठन किया जाएगा। हर कॉलेज व विश्वविद्यालय विभाग के क्लब में एनएसएस के 20 स्वयंसेवक (10 पुरुष व 10 महिला) सदस्य शामिल होंगे। क्लब के अध्यक्ष कॉलेज के प्राचार्य और विश्वविद्यालय विभाग के अध्यक्ष और एनएसएस के कार्यक्रम पदाधिकारी संयोजक होंगे। रांची विश्वविद्यालय के अंतर्गत 100 आरआरसी का गठन किया जाएगा। फरवरी के दूसरे सप्ताह में सभी आरआरसी के सदस्यों व संयोजकों का ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। राज्य एनएसएस पदाधिकारी डॉ. ब्रजेश कुमार ने बताया कि रक्तदान करने के लिए युवाओं को प्रेरित करने के इद्देश्य से आरआरसी का गठन किया जा रहा है। इसका मुख्य इद्देश्य रक्तदान को प्रोत्साहित करना है। साथ ही, एचआईवी/एड्स के संक्रमण से बचाव को लेकर कॉलेज व विश्वविद्यालय विभागों के परिसरों में जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। झारखंड में रक्त यूनिट की कमी को एनएसएस के स्वयंसेवकों के माध्यम से दूर करने की कोशिश की जाएगी। पूरे झारखंड में 200 आरआरसी के गठन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। आरआरसी क्लब एनएसएस के माध्यम से रक्तदान और एड्स पर जागरुकता कार्यक्रम भी आयोजित करेगा।

शिक्षकों व कर्मियों को सेवानिवृत्ति लाभ

विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग के दो प्राध्यापक डॉ. अरुण कुमार व डॉ. अचिंत कपूर के अलावा जूनियर इंजीनियर अनिल अग्रवाल 1 फरवरी को सेवानिवृत्त हुए। साथ ही, तृतीय वर्ग के कर्मचारी ए मिंज व चतुर्थ वर्गीय कर्मी जोहार बारला भी सेवानिवृत्त हुए। इन सभी को कुलपति सभागार में कुलपति डॉ कामिनी कुमार की उपस्थिति में सेवानिवृत्ति का लाभ प्रदान किया गया।

प्रोफेसर डीएन ओझा हुए सेवानिवृत्त

विश्वविद्यालय के सोशल साइंस के डीन और प्रोफेसर डॉ डीएन ओझा 28 फरवरी को सेवानिवृत्त हो गये. कुलपति सभागार में कुलपति डॉ कामिनी कुमार की उपस्थिति में उन्हें सेवानिवृत्ति का लाभ दिया गया. डॉ ओझा आइक्यूएससी और एचआरडीसी के निदेशक के पद पर भी रहे. इस अवसर पर कुलसचिव डॉ मुकुंद चंद्र मेहता, वित्त परामर्शी देवाशीष गोस्वामी, वित्त पदाधिकारी डॉ एएन शाहदेव, डिप्टी रजिस्ट्रार सह पीआरओ डॉ प्रीतम कुमार आदि उपस्थित थे.

मारवाड़ी कॉलेज के कर्मी भरत को मिली विदाई

मारवाड़ी कॉलेज के परीक्षा विभाग के बड़ा बाबू भरत उरांव गत मास सेवानिवृत्त हो गये. परीक्षा विभाग की ओर से विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. परीक्षा नियंत्रक डॉ बैद्यनाथ कुमार ने उन्हें सम्मानित किया. इस अवसर पर डॉ उमेश कुमार, विनय विश्वकर्मा, इशरार अहमद, अभिषेक प्रियदर्शी आदि मौजूद थे.

एमएड व बीएड की छात्राओं का उन्मुखीकरण

रांची वीमेंस कॉलेज में बीएड व एमएड नए सत्र की कक्षाएं 22 फरवरी से शुरू हुई। नए सत्र की छात्राओं के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उन्हें संबोधित करते हुए प्राचार्या डॉ शमशुन निहार ने कहा कि शिक्षा मस्तिष्क को रोशन करने का कार्य करती है, जिससे व्यक्ति आंतरिक क्षमताओं का विकास करते हुए सफल जीवन से एक सार्थक जीवन की ओर अग्रसर होता है। विभाग की समन्वयक डॉ. सीमा प्रसाद ने कहा कि शिक्षक सरलतापूर्वक विद्यार्थियों के जीवन को सार्थक बनाता है। जिसका परिणाम लंबी अवधि के बाद परिलक्षित होता है। कार्यक्रम का संचालन छात्रा अंजलि मिश्रा व अलफिसा यासिर ने किया।

For your kind Information

45 सहायक प्राध्यापकों की नियुक्ति एवं पोस्टिंग

विश्वविद्यालय ने झारखंड लोक सेवा आयोग की अनुशंसा पर गत फरवरी को 45 सहायक प्राध्यापकों (असिस्टेंट प्रोफेसर) की नियुक्ति एवं पोस्टिंग कर दी है. आयोग की ओर से प्राणी विज्ञान, दर्शन शास्त्र, कुरमाली, गणित, राजनीति शास्त्र, हिंदी, उर्दू, भूगोल जैसे विषयों के लिए असिस्टेंट प्रोफेसर की अनुशंसा की गयी थी।

प्राणी विज्ञान
रुचिका कुमारी, आरएसएसवाई कॉलेज, रांची
तारकेश्वर कुमार, पीपीके कॉलेज बुंडू
शाइनी इ सी कच्छप, मारवाड़ी कॉलेज, रांची
नेहा निधि तिर्की, जेएन कॉलेज, धुर्वा

दर्शन शास्त्र
अरुण कुमार दास, बीएनजे कॉलेज, सिसई
भावना कुमारी, आरएलएसवाई कॉलेज, रांची
रोशन प्रवीण खलखो, बीएस कॉलेज, लोहरदगा
अन्सेलम मिंज, मांडर कॉलेज, मांडर
मंजूषा पूर्ति, बिरसा कॉलेज, खूंटी
अनिल कुजूर, केवो कॉलेज, गुमला
अनूप रंजन टोप्पो, सिमडेगा कॉलेज, सिमडेगा
प्रिया कुमारी, डोरंडा कॉलेज, रांची

कुरमाली
तारकेश्वर सिंह मुंडा, यूनिवर्सिटी डिपार्टमेंट ऑफ कुरमाली

नागपुरी
रामजय नायक, जेएन कॉलेज, धुर्वा
करमी कुमारी मांझी, रांची विमेंस, कॉलेज
नंद किशोर रजक, केओ कॉलेज, गुमला
पूनम कुमारी, केसीबी कॉलेज, बेडो
कोर्नेलिइस मिंज, सिमडेगा कॉलेज, सिमडेगा
कंचन मुंडा, डोरंडा कॉलेज, रांची

गणित
निर्मला कुमारी, डोरंडा कॉलेज, डोरंडा
घनश्याम प्रसाद, मारवाड़ी कॉलेज, रांची
शीत निहाल टोपनो, यूनिवर्सिटी डिपार्टमेंट ऑफ मैथमेटिक्स
रिमिल निधि भुइयां, यूनिवर्सिटी डिपार्टमेंट ऑफ मैथमेटिक्स
अर्जुन लकड़ा, बीएस कॉलेज, लोहरदगा
अमित बारा, यूनिवर्सिटी डिपार्टमेंट मैथमेटिक्स
तारीफ लुगुन, बिरसा कॉलेज, खूंटी

भूगोल
राकेश कुमार, डोरंडा कॉलेज, रांची
जय प्रकाश रजक, मांडर कॉलेज, मांडर
अनंत राम, बिरसा कॉलेज, खूंटी

हिंदी
जीभवानी कुमार रजक, केओ कॉलेज, गुमला
छटू राम, पीपीके कॉलेज, बुंडू
प्रवीण कुमार दास, केसीबी कॉलेज, बेड़ो
पार्वती तिर्की, आरएलएसवाई कॉलेज रांची
सेनेल टेटे, मांडर कॉलेज, मांडर
प्रवीण बसंती, बीएनजे कॉलेज, सिसई
सीमा चौधरी, मारवाड़ी कॉलेज, रांची

उर्दू
मोहम्मद गालिब नश्तर, जेएन कॉलेज, धुर्वा

राजनीति शास्त्र
पवन कुमार दास, मांडर कॉलेज, मांडर
चेतना सागर, आरएलएसवाई कॉलेज, रांची
नितेश कुमार पासवान, केसीबी कॉलेज, बेड़ो
किरण रूबी, बिरसा कॉलेज, खूंटी
शेरोन सुरीन, बीएस कॉलेज, लोहरदगा
सुदीप्ति खुशबू लकड़ा, बीएनजे कॉलेज, सिसई
अंजलि टोप्पो, रांची विमेंस कॉलेज
सुरेश कुमार गुप्ता, पीपीके कॉलेज, बुंडू

24 शिक्षकों का स्थानांतरण

गत फरवरी के अंतिम सप्ताह में विवि ने 24 शिक्षकों का स्थानांतरण कर दिया है इनमें शामिल हैं
बीएस कॉलेज लोहरदगा से– डॉ. सुनील कुमार सिंह (भौतिक शास्त्र) विवि स्नातकोत्तर विभाग में।
बिरसा कॉलेज, खूंटी से– डॉ. यू. सी. एन. तिवारी (भूगोल) विवि स्नातकोत्तर विभाग में।
डोरंडा कॉलेज, राँची से– डॉ. चंद्रिका ठाकुर(हिंदी), डॉ. जेबा (मनोविज्ञान), डॉ. सुनील कुमार (भूगोल) सभी विवि स्नातकोत्तर विभाग में।
जे एन कॉलेज, राँची से– डॉ. समीरा सिन्हा (अंग्रेजी), डॉ. नन्द कुमार राणा (भौतिक शास्त्र), डॉ. सोनी तिवारी (जूलॉजी), डॉ. भारती द्विवेदी (संस्कृत) सभी विवि स्नातकोत्तर विभाग में।
मारवाड़ी कॉलेज, राँची से– डॉ. रीता कुमारी (मनोविज्ञान), डॉ. सुनीता कुमारी (हिंदी), डॉ. कंजीव लोचन (इतिहास), सभी विवि स्नातकोत्तर विभाग में।
मांडर कॉलेज, से– श्री राजेश कुमार लाल (भूगोल), डोरंडा कॉलेज राँची में।
के ओ कॉलेज, गुमला से– डॉ. हेमेंद्र भगत (दर्शन शास्त्र), विवि स्नातकोत्तर विभाग।
केसीबी कॉलेज, बेड़ो– डॉ. तरुण चक्रवर्ती (वाणिज्य), मारवाड़ी कॉलेज, राँची में। डॉ. रवि कांत मेहता (वाणिज्य), पीपीके कॉलेज, बुंडू में।
राँची विमीन्स कॉलेज से– डॉ. पूनम निगम सहाय (अंग्रेजी), डॉ. आशा लता केशरी (गणित), डॉ. नीता सिन्हा (रसायन शास्त्र), डॉ. वंदना कुमारी (प्राणी विज्ञान) सुश्री रोजलिन सिंह (मनोविज्ञान), सभी विवि स्नातकोत्तर विभाग में।
आरएलएसवाइ कॉलेज, राँची से– श्री संतोष रजवार (भौतिक शास्त्र) विवि स्नातकोतर विभाग में।
एस एस मेमोरियल कॉलेज, राँची से– श्री मनय मुंडा (मुंडारी), श्री राम किशोर भगत (कुड़ुख), सभी विवि स्नातकोत्तर विभाग में।

Published by : **Ranchi University, Ranchi** *Printed by:* **I. D. Publishing, Ranchi** © **9431182812**